A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

संगीत और अभिक्षमता

Ved Prakash[1] & Dr. Mritunjay Sharma[2]

1 Research Scholar, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla, Himachal Pradesh
2 Assistant Professor, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Shimla, Himachal Pradesh

OPEN ACCESS

सार

संगीत की योग्यता किसी व्यक्ति की संगीत सीखने और समझने की जन्मजात क्षमता को दर्शाती है। इसे अक्सर संगीत उपलब्धि से अलग किया जाता है, जो अभ्यास और शिक्षा के माध्यम से प्राप्त कौशल है। योग्यता को एक अपरिष्कृत क्षमता—वह "कान" जिसके साथ कोई व्यक्ति जन्मजात होता है—के रूप में समझें, जबकि उपलब्धि संगीत शिक्षा का परिष्कृत परिणाम है। इस योग्यता को किसी व्यक्ति की सुर, लय और लय को समझने की क्षमता का आकलन करके मापा जा सकता है। उदाहरण के लिए, उच्च सुर योग्यता वाला व्यक्ति दो बहुत समान स्वरों के बीच अंतर आसानी से बता सकता है। शोध बताते हैं कि संगीत योग्यता में आनुवंशिक घटक तो होता ही है, यह संगीत के शुरुआती संपर्क से भी प्रभावित हो सकती है। इसका मतलब है कि एक संगीतमय वातावरण में पलने-बढ़ने वाले बच्चे में संगीत की गहरी समझ विकसित हो सकती है। हालाँकि प्राकृतिक प्रतिभा किसी व्यक्ति को बढ़त दिला सकती है, लेकिन समर्पण और अभ्यास ही अंततः क्षमता को सच्ची संगीत निपुणता में बदल देते हैं।

***कुंजी शब्द**: अभिक्षमता, सांगीतिक अभिक्षमता, शास्त्रीय संगीत।*

संगीत

ऐसी सुव्यवस्थित ध्वनि जो रस की उत्पत्ति करे वह संगीत कहलाती है। जब गायन, वादन तथा नृत्य का समावेश हो जाए तो उसे संगीत की संज्ञा दी जाती है। ये तीनों विधाएं मनुष्य के समान प्रचलित है। इस कला में विचार को व्यक्त करने के लिए स्वर या वाद्य कि ध्वनि का प्रयोग किया जाता है। संगीत विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के अलग-अलग रूपों को दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जॉन कोलट्रैन ने संगीत का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है 'मेरा संगीत मेरी आस्था, मेरे ज्ञान, मेरे अस्तित्व की आधत्मिक अभिव्यक्ति है।' संगीत ध्वनि और लय को साथ मिलाकर एक मधुर कार्यात्मक रेखा बनाता है। संगीत के माध्यम से बिना शब्दों की सहायता से मन के भावों को व्यक्त किया जा सकता है और इसे समझने के लिए किसि भाषा अथवा व्याकरण की आवश्यकता नहीं होती।

संगीत मानव आवाज़ या वाद्ययंत्रों से ध्वनि का उपयोग करके बनाया जाता है। ध्वनियों को एक साथ समूहीकृत करके माधुर्य, सामंजस्य और लय बनाई जाती है, जब इन्हें एक साथ मिलाकर रिकॉर्ड किया जाता है तो वे एक गीत बन जाते हैं। कुछ संगीत तो अनायास ही बन जाता है परन्तु कुछ संगीत को रचने मे वर्षों लग जाते है, जो संगीतकार के चुनाव पर निर्भर करता है। संगीत की रचना स्वरों, वाक्यांशों, धुनों, लय, सामंजस्य और गीतों के विशाल समूह से बनी होती है, जो सभी एक विलक्षण कृति बनाते हैं। शब्द और रचना, वाद्य संगीत को संदर्भित करता है और शब्द एवं गीतन खुद को एक संगीतमय कृति बनाता है जिसमें संगीत के साथ गीत या शब्द होते हैं। संगीत दुनिया भर की लगभग हर संस्कृति का हिस्सा रहा है। संगीत समय से परे मानव उद्देश्यों का समर्थन करता है, और समाज के संकटों और विजयों की खोज करता है। संगीत अक्सर मनुष्यों द्वारा बनाया गया है जब वे संकट में डूबे हुए थे। उत्तरी अमेरिका में गुलामी के दौरान, गुलाम लोगों ने गीत के माध्यम से ही एक भाषा और संचार के साधन बनाए। गीत का यह निर्माण पीढी दर पीढी चला आ रहा है। संगीत बनाने वाले व्यक्ति वांछित परिणामों के लिए ध्वनियों को रचनात्मक रूप से व्यवस्थित करते हैं। संगीत ध्वनियों से बनी अद्भूत रचना है जिसका उपयोग अनुभवों, वातावरण और भावनाओं की एक पूरी श्रृंखला को व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है।

लगभग हर मानव संस्कृति में संगीत बनाने की परंपरा रही है। बांसुरी और दुम्दुभी जैसे शुरुआती वाद्ययंत्रों के उदाहरण हज़ारों साल पहले ही देखने को मिले हैं। प्राचीन काल में मिस्र के लोग धार्मिक समारोहों में संगीत का इस्तेमाल करते थे। अफ़्रीकी संस्कृतियों में भी महत्वपूर्ण अनुष्ठानों के लिए ढोल बजाने की परंपराएँ देखी गई हैं और हमारे भारत में तो संगीत जन्म से मृत्यु तक इंसान से जुडा है। मां की लोरी से बच्चे के रुदन तक संगीत है। आज रॉक और पॉप संगीतकार दुनिया भर में प्रदर्शन करते हैं, संगीत ने ही उन्हें प्रसिद्ध बनाया है। अगर आप किसी पसंदीदा गाने की धुन गा सकते हैं, तो आपने राग का अनुभव किया होगा। राग समन्वित स्वरों की श्रृंखला होती है जो किसी धुन की मुख्य पंक्ति बनाती है। इसे संगीत के काम में प्राथमिक आवाज़ के रूप में सोचें तो जब हम इस तरह से 'आवाज़' की बात करते हैं, तो यह एक मानवीय आवाज़ या वाद्य यंत्र की आवाज़ हो

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

सकती है। जब आप कोई रचना सुनते हैं, तो राग अलग से सुनाई देता है, लेकिन कभी-कभी अन्य ध्वनियाँ या आवाज़ें इसे सहारा देने में मदद करती हैं और संगीत को और जटिल बनाती हैं। सामंजस्य संगीत के स्वरों की कई पंक्तियों को संदर्भित करता है जो राग के अधीनस्थ होते हैं और इसे पूरक बनाते हैं। आप सामंजस्य सुन सकते हैं, लेकिन यह राग जितना प्रमुख नहीं है। सामंजस्य अक्सर रागों की एक श्रृंखला, या एक ही समय में बजाए गए तीन या अधिक स्वरों द्वारा बनता है। संगीत का एक और महत्वपूर्ण तत्व लय है , या ध्वनि में गति के दोहराए गए पैटर्न। मूल रूप से, लय समय में ध्वनि की स्थिति है। इसमें बीट्स के रूप में व्यवस्थित ध्वनि की विशिष्ट इकाइयाँ शामिल होती हैं। लय के लिए गति का विचार भी महत्वपूर्ण है , या जिस गति से बीट्स का प्रदर्शन किया जाता है। संगीत में भी कई शब्द हैं जो बताते हैं कि इसे कैसे बजाया या गाया जाना चाहिए। इनमें एलेग्रो जैसे शब्द शामिल हैं , जिसका अर्थ है त्वरित और जीवंत, और लार्गो , जिसका अर्थ है धीमा। अन्य शब्द ज़ोरदार या नरम या बोल्ड या शांत के लिए निर्देश देते हैं, या यहाँ तक कि सुझाव देते हैं कि विशिष्ट नोट्स पर कैसे ज़ोर दिया जाना चाहिए। यह सब एक वांछित अंतिम परिणाम बनाने में मदद करता है।

अभिक्षमता

यह मानव का एक प्रमुख अंश है किसी क्षेत्र विशेष में ज्ञान या कौशल प्राप्त करने की क्षमता को अभिक्षमता कहा जाता है, अभिक्षमता से आश्रय निश्चित प्रकार के कार्य को करने की क्षमता से है, यह शारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार की हो सकती है लेकिन बढा हुआ ज्ञान स्तर, समझ, सीखे हुए कौशल या अभिवृत्ति आदि अभिक्षमता में नहीं आते हैं। अभिक्षमता जन्मजात प्रकृति है न कि प्राप्त की गई वस्तु इसका अर्थ व्यक्ति की उस तत्परता, योग्यता और रुझान से है जो किसी कार्य में सफलता पाने हेतु आवश्यक होती है। इसका प्रश्न शिक्षा एवं अभ्यास द्वारा होता है इस प्रकार की प्रतिभा जन्मजात होती है । मनोविज्ञान में इसे अभिक्षमता या एप्टीट्यूड कहा जाता है ।

प्राय: हमने व्यक्तियों को कहते सुना है कि आमुख छात्र कला में दक्ष है, आमुख छात्र संगीत में योग्यता प्राप्त है, आमुख छात्र डॉक्टर बनने की योग्यता रखता है आदि l इन सभी कथनों से हमारा अभिप्राय है कि संबंधित छात्रों या व्यक्तियों आदि में विभिन्न विषयों, व्यवसाययों, कलाकृतियों आदि के लिए जन्म से ही विशिष्ट योग्यता प्राप्त है। एक सधारण व्यक्ति इसे भगवान का उपहार समझता है परंतु मनोविज्ञान में इसे ही अभिक्षमता कहा जाता है l अभिक्षमता किसी क्षेत्रीय समुह में व्यक्ति की कार्य कुशलता की विशिष्ट योग्यता या दक्षता होती है। किसी बच्चे के विकास या व्यक्ति की व्यावसायिक सफलता में अभिक्षमता का महत्वपूर्ण स्थान है ।

अभिक्षमता की परिभाषा के संबंध में मनोवैज्ञानिक एकमत नहीं है इस संबंध में दो विचारधाराए प्रचलित है एक विचारधारा के अनुसार अभिक्षमता जन्मजात है, तो दूसरी के अनुसार अभिक्षमता एक गुण है यह बहुत से गुणों का सम्मिलित प्रभाव है l अभिक्षमता वास्तव में दक्षता का ही एक हिस्सा है यह वह गुण है जिसके तहत व्यक्ति किसी विशिष्ट कार्य को विशिष्ट तरीके से करने में सक्षम होता है । इसे हम गुणों की श्रेणी में भी रख सकते हैं। अभिक्षमता भौतिक या मानसिक दोनों प्रकार की ही हो सकती है l यह प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान, समझ, सिखी या समझी गई कुशलता भी नहीं है l अभिक्षमता और इंटेलिजेंस एक दूसरे से संबंधित है। दूसरी ओर अभिक्षमता से भिन्न-भिन्न प्रकार का विशिष्ट बोध होता है जिसकी श्रेष्ठता में कोई आपसी संबंध नहीं होता l

अभिक्षमता की परिभाषा करते हुए विंघम कहते हैं "अभिक्षमता किसी व्यक्ति के प्रशिक्षण के पश्चात उसके ज्ञान, दक्षता या प्रतिक्रियाओं को सीखने की योग्यता है l" अन्य शब्दों में अभिक्षमता से अभिप्राय व्यक्ति की उस तत्परता और रुझान से है जो किसी पेशे में भावी सफलता पाने हेतु आवश्यक होती है इसका प्रस्फुटन शिक्षा और अभ्यास द्वारा होता है l बिंघम का कहना है कि अभिक्षमता एक गुण नहीं बल्कि यह तो बहुत से सम्मिलित गुणों का प्रभाव है। विभिन्न अभिक्षमता के लिए विभिन्न गुणों के मिश्रण की आवश्यकता होती है किसि अभिक्षमता के लिए यह गुण एक प्रकार से मिश्रित होते हैं बिंघम का मानना है कि अभिक्षमता एक बीजभूत योग्यता है और इसके तीन तथ्य हैं -

- इससे किसी योग्यता या ज्ञान को अर्जित किया जाता है
- यह उस योग्यता या ज्ञान को अर्जित करने की क्षमता है
- इसके अर्जन के पश्चात संतोष मिलता है

अतः अभिक्षमता मानव क्षमता का एक प्रमुख अंग है इसका तात्पर्य विभिन्न क्षेत्रों में कौशल या ज्ञान प्राप्त करने की जन्मजात योग्यता है l इसके आधार पर व्यक्तिगत विभिन्नताओं को जाना जाता है। फ्रीमैन कहते हैं "अभिक्षमता का अर्थ गुणों तथा विशेषताओं के एक ऐसे सहयोग से होता है

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

जिसमें विशिष्ट ज्ञान तथा संगठित अनुक्रियाओं के कौशल जैसे किसी भाषा को बोलने की क्षमता तथा यांत्रिक कार्य करने की क्षमता का पता लगाया जा सकता है। सामान्य अर्थों में देखा जाए तो अभिक्षमता 'क्षमता' में 'अभि' उपसर्ग लगने से बना है। क्षमता का अर्थ प्राणी के अंदर की वह योग्यता या सामर्थय से है जिससे कुछ कर पाने में सक्षम होते हैं, जब क्षमता में अभि उपसर्ग लगा दिया जाता है तो अभिक्षमता बन जाता है जिसका अर्थ सामर्थ्य शक्ति से है l प्रत्येक मनुष्य के अंदर जन्म से ही कुछ ऐसी योग्यताएं या प्रतिभाएं होती है जो आने वाले समय में किसी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होती है l जैसे-जैसे उन्हें अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है वैसे-वैसे इन क्षमताओं में अधिक निखार आने के कारण व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में सरलता महसूस करने लगता है l यदि व्यक्ति की इन योग्यताओं या क्षमताओं को प्रशिक्षित किया जाए तो उनमें और अधिक निखार देखने को मिलता है। इससे वह व्यक्ति विशेष और अधिक सफलता प्राप्त करता है। इस तरह की जन्मजात या भविष्य की ओर उन्मुख योग्यताओं एवं क्षमताओं को ही अभिक्षमता का नाम दिया जाता है l

अभिक्षमता किसी एक क्षेत्र या किसि एक समूह में मनुष्य के कार्य करने की कुशलता की विशिष्ट योग्यता होती है l बच्चों के विकास तथा किसी व्यक्ति की व्यावसायिक सफलता में घर पर माता-पिता यदि अभिक्षमता के महत्व को समझ ले तो बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए एक विशेष वातावरण बनाया जा सकता है l इन सबसे लाभ यह होगा कि बच्चों के आंतरिक गुण आसानी से बाहर आ जाएंगे उसके अंदर के प्रतिभा और योग्यताओं को पहचान कर उसे उचित वातावरण तैयार करके उसे उसकी रुचि एवं क्षमताओं के अनुसार शिक्षा दी जा सकती है l अभिक्षमता मानव में उपलब्ध क्षमता का ही एक अंश है l किसी क्षेत्र में कौशल या ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता ही अभिक्षमता है l इस विषय में फ्रीमेन कहते हैं कि " इंनका सम्बंध गुणों या विशेषताओं के ऐसे सहयोग से होता है जिससे विशिष्ट ज्ञान और संगठित क्षमता का पता चलता है"। टुकमैन का कहना है कि "क्षमताओं या अन्य गुणों के ऐसे संयोग को जो चाहे जन्मजात हो या अर्जित ज्ञान हो या जिससे किसी क्षेत्र में विशेष प्रवीणता विकसित करने या किसी व्यक्ति के सीखने की दक्षता का पता चलता हो अभिक्षमता कहते हैंl"

अभिक्षमता की परिभाषा एवं स्वरूप

अंग्रेजी भाषा में अभिक्षमता को एप्टीट्यूड कहा जाता है। एप्टीट्यूड शब्द 'एप्टोस' से लिया गया है इसका अर्थ है 'के लिए उपयुक्त'। कई बार यह देखा गया है कि अभिक्षमता को क्षमता, प्रवीणता आदि जैसे शब्दों के पर्यायवाची के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। शिक्षा शास्त्र के शब्दकोश के अनुसार अभिक्षमता को एक विशेष कला, स्कूल या व्यवसाय के प्रदत्त कार्यक्षेत्र की क्षमता या सुस्पष्ट स्वाभाविक क्षमता या योग्यता के रूप में परिभाषित किया गया है।

एक ऐसी स्थिति या विशेषताओं का समूह जिसे किसी व्यक्ति के प्रशिक्षण के साथ कुछ ज्ञान कौशल या प्रतिक्रियाओं के समूह जैसे भाषा बोलने, संगीत बनाने आदि की क्षमता के रूप में माना जाता है" (वारेन मनोविज्ञान के शब्दकोश) अभिक्षमता को पर्याप्त मात्रा में प्रसिद्ध प्रशिक्षण के साथ प्रवीणता हासिल करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है (English and English 1958) अभिक्षमता एक शब्द है गुणवत्ता या गुना का एक समूह है जो संभावित सीमा तक इंगित करता है कि कोई व्यक्ति उपयुक्त प्रशिक्षण, कुछ ज्ञान, समझ या कौशल के तहत प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है। (ट्रैक्स्लर-1957)

इन सभी परिभाषाओं का विश्लेषण करने के बाद हम कुछ प्रकार की विशेषताओं के बारे में बता सकते हैं

- अभिक्षमता किसी व्यक्ति की ही क्षमता का सूचक है
- व्यक्ति संभावनाओं के साथ जन्म लेता है उसके बाद पर्यावरण उन संभावनाओं की अभिव्यक्ति में सहयोगी या बाधक बनता है।
- अभिक्षमता सिखाने की योग्यता में योगदान देती है
- अभिक्षमता संगीत या चित्रकला जैसे विशिष्ट क्षमताओं तक ही सीमित नहीं है यह शैक्षिक विषयों को समझने के लिए छात्रों का परीक्षण भी करती है
- अभिक्षमता व्यक्ति के भविष्य की योग्यता की जानकारी देती है, कई बार सुनने को मिलता है कि आमुख बच्चा आमुख क्षेत्र में अच्छा करेगा या सफल होगा यह जानकारी अभिक्षमता से ही प्राप्त होती है
- व्यक्ति के उन गुणों को भी अभिक्षमता कहा जाता है जो उपयुक्त प्रशिक्षण के बाद प्रस्फुटित हुए हों

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

- अभिक्षमता परीक्षण करने के बाद ज्ञात किया जा सकता है कि कोई बच्चा किस क्षेत्र में सफल होगा उदाहरण के लिए यदि किसी के पास संगीतकार बनने की उपयुक्त क्षमता नहीं है तो वह स्वर ताल ले या पिच जैसे संगीत के पहलुओं को नहीं सीख सकता।

अभिक्षमता को ऐसी प्रतिभा भी कहा जा सकता है जो जन्मजात होती है किंतु समय-समय पर यह व्यक्ति के व्यवहार एवं कार्यों पर दृष्टिगोचर रहती है। अत: कहा जा सकता है कि अभिक्षमता एक ऐसा महत्वपूर्ण पद है कि जिसका अर्थ किसी क्षेत्र में ज्ञान, अभिरुचि, कौशल आदि विकसित करने की क्षमता से है। उन गुणों का संयोग जिनसे कुछ विशिष्ट ज्ञान एवं संगठित अनुक्रियाओं के सेट की कौशलता जैसे कोई भाषा बोलना, गायन करना, यांत्रिक कार्य करना आदि को सीखने की क्षमता का पता चलता है वह अभिक्षमता कहलाता है।(फ्रीमैन 1962) क्षमता एवं अन्य गुण चाहे जन्मजात हो या अर्जित हो, एक ऐसा संयोग जिससे व्यक्ति में सीखने की क्षमता या किसी खास क्षेत्र में निपुणता विकसित करने की क्षमता का पता चलता है वह अभिक्षमता कहलाती है (टूकमैन 1975) किसी विशिष्ट परीक्षण के उपरांत दिए गए क्षेत्र में कुछ ज्ञान, कौशल या प्रतिक्रियाओं को अर्जित करने की किसी व्यक्ति की योग्यता को लाक्षणिक रूप से व्यक्त करने वाली विशेषता का समुच्चय ही अभिक्षमता है (बिंघम)मनोवैज्ञानिकों द्वारा अभिक्षमता को अलग-अलग तरीकों से परिभाषित किया गया है। इस शब्द का प्रयोग आम लोगों, मनोवैज्ञानिक और परामर्शदाताओं ने अलग-अलग प्रकार से किया है। इसकी परिभाषा एक दूसरे से मेल नहीं खाती।

सांगीतिक अभिक्षमता

संगीत को सीखने, समझने, जानने या प्रदर्शन करने के लिए जिस स्वाभाविक क्षमता की आवश्यकता होती है उसे ही सांगीतिक अभिक्षमता कहते है। यह एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति में जन्म से ही विद्यमान होता है। यही गुण व्यक्ति को संगीत के प्रति संवेदनशील बनाता है। यह क्षमता हर व्यक्ति में अलग-अलग होती है। हमने अपने आसपास के लोगों को देखा होगा कि यदि कहीं से संगीत की हल्की सी ध्वनि या कोई हल्की सी धुन भी सुनाई दे तो उसके पैर, हाथ, सर आदि हिलने लगते हैं यह सब सांगीतिक अभिक्षमता के कारण ही होता है। सांगीतिक अभिक्षमता से ही संगीत के विभिन्न तत्वों जैसे स्वर, ताल, लय आदि संगीत की संरचना को समझने में सहायता मिलती है। संगीत की योग्यता को या तो बहुत कुछ या फिर कुछ भी नहीं के रूप में देखा गया है। कुछ लोगों को यह एक वरदान के रूप में प्रदान होती है किंतु कुछ लोगों को इसके बिना ही काम चलाना पड़ता है। कुछ शोधों से यह पता लगता है कि सांगीतिक अभिक्षमता भी अन्य विशेषताओं की तरह मानव में विद्यमान होती है। सभी व्यक्तियों में संगीत के क्षेत्र में सफल होने की क्षमता नहीं होती। अपेक्षाकृत यह क्षमता कम लोगों में ही बहुत उच्च स्तर पर होती है। संगीत शिक्षण विधियों के अंतर्गत छात्रों के संगीत सीखने के सिद्धांत संगीत में सफलता प्राप्त करने की भिन्न-भिन्न क्षमताओं को ध्यान में रखने में आदित्य है। एआय के अनुसार,"सांगीतिक अभिक्षमता का अर्थ संगीत के प्रति सहज रूप से आकर्षित होने की क्षमता, सीखने की गति और संगीत के संबंधित चीजों को आसानी से समझने की योग्यता है।"

सांगीतिक अभिक्षमता के मुख्य पहलू

- लय और ताल की समझ- संगीतिक अभिक्षमता के माध्यम से संगीत की लय तथा ताल को आसानी से समझा जा सकता है। किसी गीत विशेष में लगने वाली ताल का पालन इसके द्वारा ही किया जाता है।
- स्वर की पहचान- जिस व्यक्ति में संगीतिक अभिक्षमता विद्यमान होगी वह तुरंत ही स्वरों को पहचान लेगा। यह दो स्वरों के बीच के अंतर (ऊंचा एवं नीचापन) को जानने में सहायता करती है। इससे स्वरों का वॉल्यूम भी पता चलता है कि कौन सी ध्वनि अधिक जोर से सुनाई दी और कौन सी कम। संगीतिक अभिक्षमता वाला व्यक्ति इसे आसानी से पहचान लेता है।
- ध्वनि स्मृति- संगीत को याद रखना और उसे दोहराने की क्षमता संगीतिक अभिक्षमता के माध्यम से ही संभव है। जिस व्यक्ति में संगीतिक अभिक्षमता होगी वह किसी भी स्वरावली को आसानी से याद रख पाएगा तथा दो मिलती-जुलती सरावलियों के बीच के अंतर को भी आसानी से समझ लेगा।
- वाद्य यंत्र की ध्वनि की पहचान- दो अलग-अलग ध्वनि वाले वाद्य यंत्र की पहचान तो कोई भी व्यक्ति कर सकता है किंतु दो एक समान या मिलती जुलती ध्वनि वाले वाद्य यंत्रों को संगीतिक अभिक्षमता के माध्यम से ही पहचाना जा सकता है। उदाहरण स्वरूप सारंगी और वायलिन या सितार और सुरबहार की ध्वनि की पहचान केवल सांकेतिक अभिक्षमता युक्त व्यक्ति ही कर सकता है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

- संगीत की भावना- हमारे देश में अलग-अलग प्रकार का संगीत पाया जाता है जैसे शास्त्रीय संगीत, फिल्म संगीत, लोक संगीत आदि l इन सभी में अलग-अलग भाव रहते हैं इन सभी भावों को समझना और उन्हें व्यक्त करना सांगीतिक अभिक्षमता के माध्यम से ही सार्थक हो सकता है।
- रचनात्मकता- संगीतिक अभिक्षमता से मन में उत्पन्न होने वाले संगीत के विचारों को भी व्यक्त किया जा सकता है। कोई व्यक्ति विशेष इसके माध्यम से ही नए-नए गीतों आदि की रचनाएं कर सकता है l

सांगतिक अभिक्षमता ज्ञात करने के कारक

अभिक्षमता एक विस्तृत विषय है। संगीत के परिपेक्षय में मनोविज्ञान द्वारा संगीत के प्रति विद्यार्थीयों की रुचि, अभिक्षमता, रुझान और व्यक्त करने की प्रवृत्ति का विकास किया जा सकता है। विद्वानों के अनुसार किसी भी मनुष्य में स्वर और लय के प्रति प्रारंभ से ही संवेदना विद्यमान रहती है। संगीत के लिए विद्यार्थीयों की अभिक्षमता कुछ मनोवैज्ञानिक गुणों पर आधारित होती है। इन गुणों को मनोविज्ञानिक परीक्षण के माध्यम से जाना जा सकता है। किसी विद्यार्थी में संगीत के प्रति अभिक्षमता ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित कारकों का प्रयोग होता है

तारता: नाद की ऊंची नीची स्थिति को तारता कहते हैं। यह किसी ध्वनि में उत्पन्न आंदोलन के कंपन पर निर्भर करता है। यह साधारण अनुभव की बात है की तरता या उँचे-नीचें पन से एक ध्वनि को दूसरे से हम अलग सुनते और पहचानते हैं। संगीत के विद्यार्थी इस चीज़ को बहुत अच्छे से समझते हैं कि कौन सी ध्वनि उँची है और कौन सी नीची। जैसे गंधार की ध्वनि षडज की से उँची है और मध्यम कि धैवत से निची। एक स्वर दूसरे से कितना उँचा या नीचा है या षडज से उसका कितना उँचा-निचापन है, इसी लक्षण को तारता कहते हैं। तारता से विद्यार्थी के स्वर ज्ञान की परीक्षा होती है।

तीव्रता: तीव्रता का अर्थ ध्वनि के तेज या हल्के से है। यह आघात पर निर्भर करती है। वस्तु पर आघात यदि जोर से होगा तो ध्वनि भी जोर से ही निकलेगी और यदि आघात धीमे होगा तो ध्वनि भी धीमी ही निकलेगी। यदि आघात ज़ोर से होगा तो नाद बड़ा तथा यदि धीरे से होगा तो नाद छोटा और काम दूर तक सुनाई देगा। हम यह जानते हैं कि दो ध्वनियों की तारता समान होने पर भी वे तीव्रता में भिन्न हो सकती है। जैसे यदि किसी तार को धीरे से छेड़ा जाएगा तो उससे जो ध्वनि निकलेगी वह बहुत कम दूर तक सुनाई देगी अर्थात उसकी तीव्रता कम होगी। किंतु यदि उसी तार को जोर से छेड़ा जाए तो ध्वनि की तारता में कोई अंतर न आने पर भी उसकी तीव्रता बढ़ जाएगी यानी वह अधिक दूर तक सुनाई देगा।

गुण या जाति: ध्वनि की तारता और तीव्रता से बिल्कुल अलग यह एक ऐसा गुण है जिससे हम यह जान लेते हैं कि ध्वनि किस वाद्य यंत्र से निकली है अथवा मनुष्य कंठ से निकली है। भिन्न-भिन्न वस्तुओं के उत्पन्न नाद में विभिन्न तत्व नाद की जाति कहलाती है। इसी कारण ही ध्वनि एक दूसरे से भिन्न पहचानी जाती है। यदि एक स्वर को दो अलग-अलग वाद्यों में बजाया जाए फिर भी दोनों में भिन्नता दिखेगी यही भिन्नता उसका गुण या जाति कहलाती है।

समय: यह ध्वनि का समय बताता है की ध्वनि कितने समय तक सुनाई दी। इसे काल या अवधि भी कहते हैं। इसका संबंध लम्बाई से होता है। स्वरों की लंबाई ही ध्वनि की अवधि कहलाती है।

लय: ताल की गति को लय कहते हैं। जिस प्रकार ताल की गति अलग-अलग होती है उसी प्रकार लय भी अलग-अलग होती है। लय को तीन भागों में बांटा गया है विलंबित लय, मध्य लय, और दूध लय। जो लय बहुत धीमी गति से चलती है उसे विलंबित लय और जो लय न तो धीमी और न तेज हो उसे मध्यालय और जो लय अधिक तेज गति से चलती है उसे द्रुत लय कहते हैं

ध्वनि स्मृति: किसी भी सांगीतिक ध्वनि या स्वरावली को हम कितने समय तक याद रख सकते हैं उसे ध्वनि स्मृति कहते हैं। यह अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग हो सकता है यह भी सांगीतिक अभिक्षमता पर निर्भर करता है।

सांगीतिक अभिक्षमता का विकास

सांगीतिक अभिक्षमता को बचपन से ही संगीत के संपर्क में रहने और संगीत की शिक्षा प्राप्त करने से विकसित किया जा सकता है। संगीत वाद्ययंत्र बजाना, गाना, और संगीत सुनना सांगीतिक अभिक्षमता को विकसित करने के अच्छे तरीके हैं। सांगीतिक अभिक्षमता आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारकों का एक संयोजन है। कुछ लोग स्वाभाविक रूप से संगीत के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, जबकि अन्य को अभ्यास और

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

प्रशिक्षण के माध्यम से अपनी संगीत क्षमताओं को विकसित करने की आवश्यकता होती है। सांगीतिक अभिक्षमता को विकसित करने के कुछ तरीके इस प्रकार हैं:

- शुरुआती संगीत संपर्क: बचपन से ही संगीत सुनना, गाना और संगीत वाद्ययंत्रों के संपर्क में रहना।
- औपचारिक संगीत शिक्षा: संगीत के सिद्धांत, इतिहास और प्रदर्शन का अध्ययन करना।
- अभ्यास: नियमित रूप से संगीत वाद्ययंत्र बजाना या गाना।
- संगीत कार्यक्रमों में भाग लेना: संगीत समारोहों, संगीत कार्यक्रमों और अन्य संगीत आयोजनों में भाग लेना।

सांगीतिक अभिक्षमता का महत्व

सांगीतिक अभिक्षमता संगीत के क्षेत्र में सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है, लेकिन यह एकमात्र कारक नहीं है। प्रेरणा, समर्पण, अभ्यास और अवसर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संगीतिक अभिक्षमता वाले व्यक्ति संगीतकार, गायक, संगीत शिक्षक, और अन्य संगीत पेशेवर बन सकते हैं। किंतु यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि-

- सांगीतिक अभिक्षमता एक बहुआयामी अवधारणा है, और कोई भी व्यक्ति सभी क्षेत्रों में समान रूप से मजबूत नहीं हो सकता है।
- सांगीतिक अभिक्षमता को परीक्षणों के माध्यम से मापा जा सकता है, लेकिन ये परीक्षण केवल एक संकेत देते हैं, पूर्ण माप नहीं।
- सांगीतिक अभिक्षमता को जीवन भर विकसित किया जा सकता है।

सांगीतिक अभिक्षमता को प्रभावित करने वाले कारक

सांगीतिक अभिक्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों को दो मुख्य श्रेणियों में बांटा जा सकता है: आनुवंशिक कारक और पर्यावरणीय कारक।

1. **आनुवंशिक**

ये कारक जन्मजात होते हैं और व्यक्ति के जीन में मौजूद होते हैं। ये व्यक्ति की संगीत के प्रति संवेदनशीलता, स्वरों को पहचानने की क्षमता, लय और ताल की समझ, और संगीत को याद रखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि सांगीतिक अभिक्षमता का एक महत्वपूर्ण आनुवंशिक आधार है। इसका मतलब है कि कुछ लोग स्वाभाविक रूप से संगीत के प्रति अधिक झुकाव रखते हैं क्योंकि उन्हें अपने माता-पिता से कुछ जीन विरासत में मिले हैं जो उनकी संगीत क्षमताओं को बढ़ाते हैं।

2. **पर्यावरणीय**

ये कारक व्यक्ति के जीवन के दौरान उसके आसपास के वातावरण और अनुभवों से संबंधित होते हैं। ये कारक निम्नलिखित हैं:

- शुरुआत से ही संगीत से संपर्क: बाल्यकाल से ही संगीत सुनना, गीत गाना और संगीत वाद्ययंत्रों से संपर्क रखना सांगीतिक अभिक्षमता को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जिन बच्चों को बचपन से ही संगीत का वातावर्ण मिलता है, उनमें संगीत के प्रति रुचि और समझ विकसित होने की संभावना अधिक होती है।
- संगीत की औपचारिक शिक्षा: सांगीतिक सिद्धांत, इतिहास और प्रदर्शन करना सांगीतिक अभिक्षमता को बढ़ाता है। संगीत शिक्षा से व्यक्ति संगीत की बारीकियों को समझता है और अपनी सांगीतिक क्षमताओं को निखारता है।
- सांस्कृतिक पृष्ठभूमि: व्यक्ति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी उसकी संगीतिक अभिक्षमता को प्रभावित कर सकती है। कुछ संस्कृतियों में संगीत को बहुत महत्व दिया जाता है और बच्चों को कम उम्र से ही संगीत सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसी संस्कृतियों में पले-बढ़े बच्चों में सांगीतिक अभिक्षमता विकसित होने की संभावना अधिक होती है।
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति: कुछ अध्ययनों से पता चला है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति भी संगीतिक अभिक्षमता को प्रभावित कर सकती है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के बच्चों को संगीत की शिक्षा और संगीत वाद्ययंत्रों तक अधिक पहुंच होने की संभावना होती है, जिससे उनकी संगीत क्षमताओं को विकसित करने में मदद मिलती है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

- प्रेरणा और प्रोत्साहन: व्यक्ति की अपनी प्रेरणा और दूसरों से मिलने वाला प्रोत्साहन भी उसकी संगीतिक अभिक्षमता को प्रभावित करता है। यदि व्यक्ति संगीत सीखने के लिए प्रेरित है और उसे दूसरों से प्रोत्साहन मिलता है, तो वह अपनी संगीत क्षमताओं को अधिक विकसित कर पाएगा।

सांगीतिक अभिक्षमता आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारकों का एक जटिल अंतःक्रिया है। कुछ लोग स्वाभाविक रूप से संगीत के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, लेकिन पर्यावरणीय कारक भी उनकी संगीत क्षमताओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए, यदि कोई व्यक्ति अपनी सांगीतिक अभिक्षमता को विकसित करना चाहता है, तो उसे कम उम्र से ही संगीत के संपर्क में रहना चाहिए, संगीत की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, और नियमित रूप से अभ्यास करना चाहिए।

उपसंहार

संगीत की योग्यता किसी व्यक्ति की संगीत सीखने और समझने की जन्मजात क्षमता को दर्शाती है। इसे अक्सर संगीत उपलब्धि से अलग किया जाता है, जो अभ्यास और शिक्षा के माध्यम से प्राप्त कौशल है। योग्यता को एक अपरिष्कृत क्षमता—वह "कान" जिसके साथ कोई व्यक्ति जन्मजात होता है—के रूप में समझें, जबकि उपलब्धि संगीत शिक्षा का परिष्कृत परिणाम है। इस योग्यता को किसी व्यक्ति की सुर, लय और लय को समझने की क्षमता का आकलन करके मापा जा सकता है। उदाहरण के लिए, उच्च सुर योग्यता वाला व्यक्ति दो बहुत समान स्वरों के बीच अंतर आसानी से बता सकता है। शोध बताते हैं कि संगीत योग्यता में आनुवंशिक घटक तो होता ही है, यह संगीत के शुरुआती संपर्क से भी प्रभावित हो सकती है। इसका मतलब है कि एक संगीतमय वातावरण में पलने-बढ़ने वाले बच्चे में संगीत की गहरी समझ विकसित हो सकती है। हालाँकि प्राकृतिक प्रतिभा किसी व्यक्ति को बढ़त दिला सकती है, लेकिन समर्पण और अभ्यास ही अंततः क्षमता को सच्ची संगीत निपुणता में बदल देते हैं। सांगीतिक अभिक्षमता आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारकों का एक जटिल अंतःक्रिया है। कुछ लोग स्वाभाविक रूप से संगीत के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, लेकिन पर्यावरणीय कारक भी उनकी संगीत क्षमताओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संदर्भ

तिवारी, किरन. (2008). संगीत एवं मनोविज्ञान, कनिशष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली।
भट्टी, राजेश कुमार. (2006). शैक्षणिक मापन एवं मूल्यांकन, लक्ष्मी बुक डिपो, हरियाणा।
शर्मा, आर.एस. (2006). शिक्षा अनुसन्धान, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।
शर्मा, ए० आर०, (2007). शैक्षणिक एवं मानसिक मापन, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।
सीशोर, चार्ल ई. (1938). संगीत का मनोविज्ञान, मैकग्रॉ-हिल बुक कंपनी, इंक न्यूयॉर्क।